चूहा हाथी

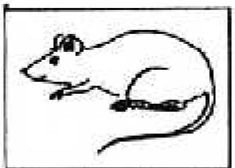
चूहा

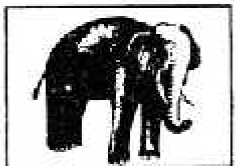
हाथी

तराजू

—ता

चकला

—लटेन

ढोलक

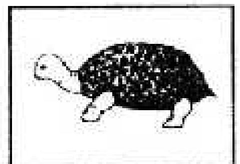
—छुआ

माला

जाला

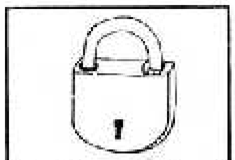
—ला

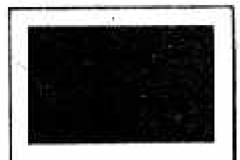
—ला

पली	परी	प	प—	प—	
मन	मान	मना	पट	प—	प—
पर	पीर	परी	कस	—स	क—

हाथी आया। चूहा आया। गधा आया। हाथी जंगल गया। चूहा घर गया। गधा बाज़ार गया। हाथी ने केला खाया। चूहे ने आम खाया। गधे ने टमाटर खाया। हाथी सो गया। चूहा सो गया। गधा सो गया।

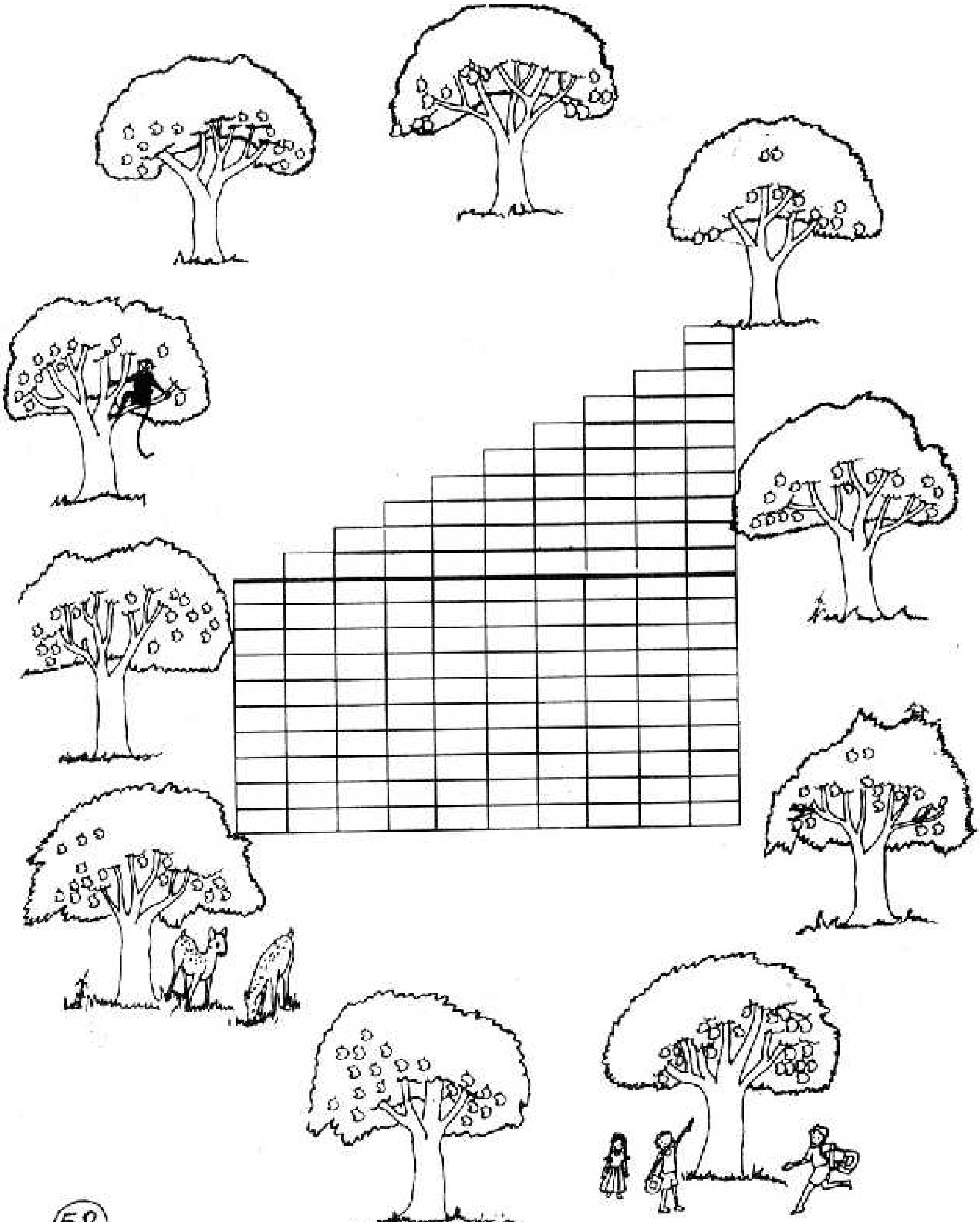

कौन किसके साथ?

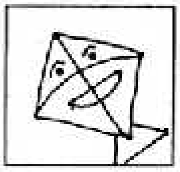

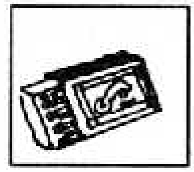

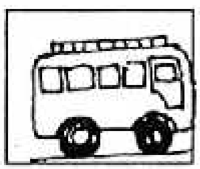

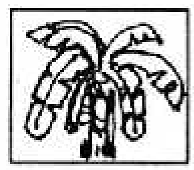
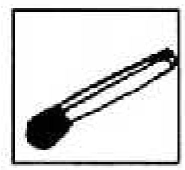

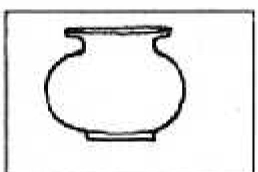
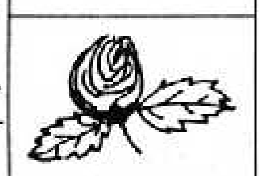

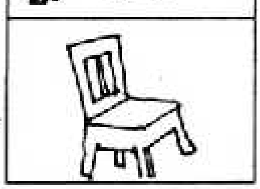

किसने बोला 'म्याऊँ'?

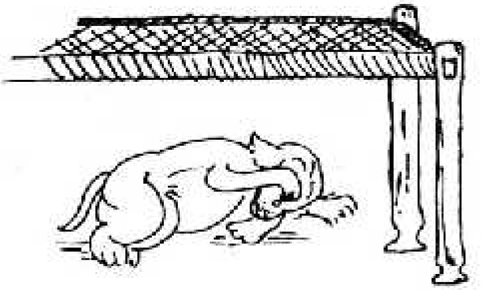

एक पिल्ला खाट के नीचे सो रहा था। तभी उसे एक आवाज़ आई - 'म्याऊँ'।

पिल्ला झट उठ बैठा। इधर - उधर देखा। सब जगह ढूंढा कि आवाज़ कहाँ से आई -

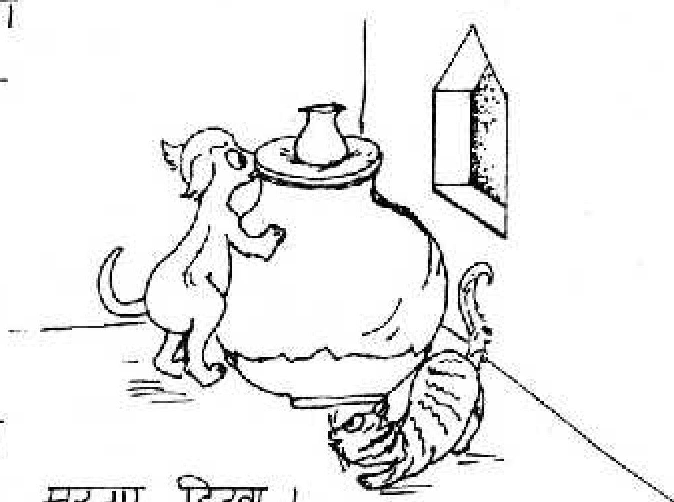

पेटी के ऊपर,
चादर के नीचे,
मटके के पीछे।
पर कहीं कोई न था।

घर से बाहर आया
तो पिल्ले को एक मुरगा दिखा।

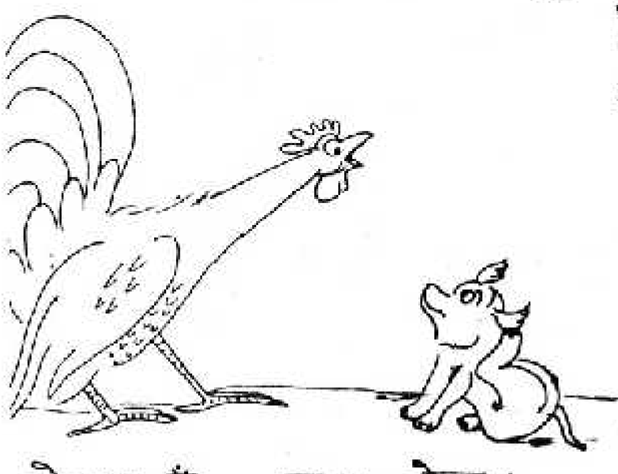

पिल्ले ने मुरगे से पूछा-
क्या तुमने बोला 'म्याऊँ'?
नहीं, मैं तो 'कुक्कड़ू कूं' बोलता हूँ। मुरगा बोला।
कुछ और नहीं बोल सकते?- पिल्ले ने पूछा।
नहीं, मैं तो कुक्कड़ू कूं बोलता हूँ - मुरगा बोला।
पिल्ला सिर खुजाता हुआ आगे चला।

तभी फिर किसी ने कहा -
'म्याऊँ'।
पिल्ला नींबू के झाड़ के
नीचे खोदने लगा। एक चूहा
फुदककर बाहर निकला।

पिल्ले ने चूहे से पूछा - **क्या तुमने बोला 'म्याऊँ'?**
नहीं मैं तो 'चीं-चीं-चीं' बोलता हूँ - चूहा बोला। और
डर कर भाग गया।

पिल्ला गेंदे के फूल के पास पहुँचा।
फिर आवाज़ आई - '**म्याऊँ**'। फूल पर एक
मधु-मक्खी बैठी थी। पिल्ले ने मक्खी
से पूछा - **क्या तुमने बोला 'म्याऊँ'?**
नहीं, मैं तो भिन्न-भिन्न-भिन्न बोलती हूँ।
मधु-मक्खी पिल्ले की नाक पर डंक मार कर उड़ गई।

पिल्ला आऊं-आऊं करता हुआ तालाब में कूद गया।

वहाँ उसे फिर सुनाई
दिया - **म्याऊँ**'। पानी
में एक मछली तैर रही
थी। पिल्ले ने मछली से
पूछा - **क्या तुमने बोला**
म्याऊँ?
मछली कुछ बोली नहीं।
अपनी पूंछ हिला कर आगे निकल गई।

पास ही एक पत्ते पर एक मेंढक बैठा था। पिल्ले ने मेंढक से पूछा, **क्या तुमने बोला 'म्याऊँ'** ? **मेंढक बोला - मैं तो टर्र-टर्र-टर्र बोलता हूँ।** और वह पानी में कूद कर गायब हो गया।

किसने बोला **म्याऊँ** ? पिल्ला सोचता - सोचता वापस घर पहुँचा। वह अपनी खाट के नीचे घुस रहा था कि फिर से आवाज़ आई - '**म्याऊँ**'। पिल्ला चौंका। अब तुम ही उसे बताओ कि किसने बोला म्याऊँ। और वह कहाँ छुपी होगी कि पिल्ला उसे ढूंढ नहीं पाया?